ALLAH WALON KI NAMAZ (HINDI BAYAAN)

अल्लाह वालों की नमाज़

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में
होने वाला सुन्नतों भरा हिन्दी बयान



اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

نَوَيْتُ سُنَّتَ الاعْتِكَاف (**तर्जमा :** मैं ने सुन्नत ए'तिकाफ़ की निय्यत की)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब भी मस्जिद में दाख़िल हों, याद आने पर नफ़्ली ए'तिकाफ़ की निय्यत फ़रमा लिया करें, जब तक मस्जिद में रहेंगे, नफ़्ली ए'तिकाफ़ का सवाब ह़ासिल होता रहेगा और ज़िमनन मस्जिद में खाना, पीना, सोना भी जाइज़ हो जाएगा।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरकारे वाला तबार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : ऐ लोगो ! बेशक बरोज़े क़ियामत उस की दहशतों और ह़िसाब किताब से जल्द नजात पाने वाला शख़्स वोह होगा जिस ने तुम में से मुझ पर दुन्या में ब कसरत दुरूद शरीफ़ पढ़े होंगे।[1]

चारए बे चारगां पर हों दुरूदें सद हज़ार
बेकसों के ह़ामी व ग़मख़्वार पर लाखों सलाम

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ुसूले सवाब की ख़ातिर बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेते हैं। फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ" मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।[2]

दो मदनी फूल :-

(1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

1.... فردوس الاخبار، ج ۲ / ۴۷۱، حدیث ۸۲۱۰

2.... اَلْمُعجمُ الکبیر لِلطّبرانی ج ۶ ص ۱۸۵ حدیث ۵۹۴۲

www.dawateislami.net

बयान सुनने की निय्यतें :

निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगा । ۞ टेक लगा कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ता'ज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगा । ۞ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरे के लिये जगह कुशादा करूंगा । ۞ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगा, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगा । ۞ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوا اللّٰه، تُوبُوْا اِلَى اللّٰه वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वालों की दिलजूई के लिये बुलन्द आवाज़ से जवाब दूंगा । ۞ बयान के बा'द ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़हा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगा ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बयान करने की निय्यतें :

मैं भी निय्यत करता हूं ۞ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिये बयान करूंगा । ۞ देख कर बयान करूंगा । ۞ पारह 14 सूरतुन्नहूल, आयत 125 : ﴿اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ﴾ (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अपने रब की राह की त़रफ़ बुलाओ पक्की तदबीर और अच्छी नसीह़त से) और बुख़ारी शरीफ़ (की ह़दीस 3461) में वारिद इस फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : بَلِّغُوْا عَنِّيْ وَلَوْ اٰيَةً [1] "पहुंचा दो मेरी त़रफ़ से अगर्चे एक ही आयत हो" में दिये हुवे अह़काम की पैरवी करूंगा । ۞ नेकी का हुक्म दूंगा और बुराई से मन्अ़ करूंगा । ۞ अश्आ़र पढ़ते नीज़ अ़रबी, अंग्रेज़ी और मुश्किल अल्फ़ाज़ बोलते वक़्त दिल के इख़्लास पर तवज्जोह रखूंगा या'नी अपनी इल्मिय्यत की धाक बिठानी मक़्सूद हुई तो बोलने से बचूंगा । ۞ मदनी क़ाफ़िले, मदनी इन्आ़मात, नीज़ अ़लाक़ाई दौरा, बराए नेकी की दा'वत वग़ैरा की रग़बत दिलाऊंगा । ۞ क़ह्क़हा लगाने और लगवाने से बचूंगा । ۞ नज़र की ह़िफ़ाज़त का ज़ेहन बनाने की ख़ातिर ह़त्तल इमकान निगाहें नीची रखूंगा । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

1.... بخاری، کتاب احادیث الانبیاء، باب ماذکر عن بنی اسرائیل، ۲/۴۶۲، حدیث: ۳۴۶۱

www.dawateislami.net

क़ुरआन और नमाज़ का शैदाई

हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के मुजाहदात और इबादात का ज़िक्र करते हुवे शम्ए रिसालत के दो परवानों का वाक़िआ़ बयान करते हुवे फ़रमाते हैं : एक मरतबा हम रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ किसी ग़ज़वे में गए, वापसी पर हम पहाड़ी अ़लाक़े से गुज़रे और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वहां क़ियाम का हुक्म फ़रमाया । सब सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان आराम की ख़ातिर वहां ठहर गए, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : आज रात तुम में से कौन पहरा देगा ? एक मुहाजिर और एक अन्सारी सह़ाबी (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) खड़े हुवे और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह सआ़दत हम ह़ासिल करना चाहते हैं, हमें क़बूल फ़रमा लीजिये । चुनान्चे, वोह दोनों इजाज़त पा कर पहरा देने के लिये तय्यार हो गए, दोनों ने मश्वरा किया और अन्सारी सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : हम ऐसा करते हैं कि आधी रात हम में से एक पहरा देगा और दूसरा सो जाएगा, फिर बक़िय्या आधी रात दूसरा पहरा देगा और पहला सो जाएगा, लिहाज़ा आप आराम फ़रमाएं, मैं जागता हूं फिर आप पहरा देना, पस मुहाजिर सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आराम फ़रमाने लगे और अन्सारी सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पहरा देने के लिये तय्यार हो गए । कुछ देर के बा'द इन्हों ने नमाज़ पढ़ना शुरूअ़ कर दी और सूरए कह्फ़ की क़िराअत करने लगे दुश्मनों की त़रफ़ से एक शख़्स आया और उस ने पहाड़ी पर चढ़ कर देखा तो उसे एक शख़्स नमाज़ पढ़ता हुवा दिखाई दिया, उस ने कमान पर तीर चढ़ाया और निशाना बांध कर उस सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर तीर चला दिया, तीर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के जिस्म में पैवस्त हो गया, लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कोई ह़रकत न की और नमाज़ में मश्ग़ूल रहे, उस ज़ालिम ने दूसरा तीर मारा, वोह भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के जिस्मे अक़्दस में उतर गया, लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने नमाज़ न तोड़ी फिर उस ने तीसरा तीर मारा, वोह भी सीधा आया और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ज़ख़्मी करता हुवा जिस्म में पैवस्त हो गया । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रुकूअ़ व सुजूद किये और नमाज़ मुकम्मल करने

www.dawateislami.net

के बा'द अपने रफ़ीक़ को जगाया । जब उस काफ़िर ने देखा कि यहां येह अकेला नहीं बल्कि इस के रुफ़क़ा (साथी) भी क़रीब ही मौजूद हैं तो वोह फ़ौरन भाग गया । मुहाजिर सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने रफ़ीक़ (साथी) की येह ह़ालत देखी तो जल्दी जल्दी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के जिस्म से तीर निकाले और पूछा : जब आप पर दुश्मन ने ह़म्ला किया तो आप ने मुझे जगाया क्यूं नहीं ? इस पर क़ुरआन व नमाज़ के शैदाई उस अन्सारी सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जवाब दिया : मैं ने नमाज़ में एक सूरत शुरूअ़ की हुई थी मैं ने येह गवारा न किया कि सूरत को अधूरा छोड़ कर नमाज़ तोड़ डालूं, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर मुझे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पहरे की ज़िम्मेदारी न दी होती तो मैं अपनी जान दे देता लेकिन सूरत को ज़रूर मुकम्मल करता, लेकिन मुझे हुज़ूर सरापा नूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पहरा देने का हुक्म फ़रमाया था इस लिये मेरी ज़िम्मेदारी थी कि इस को अह़सन त़रीक़े से सर अन्जाम दूं । जब मैं ने देखा कि मैं बहुत ज़ियादा ज़ख़्मी हो गया हूं तो इसी एह़सासे ज़िम्मेदारी की वज्ह से नमाज़ को मुख़्तसर कर दिया और आप को जगा दिया ताकि दुश्मन मज़ीद ह़म्ला न कर सके ।[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ क़ुरबान जाइये इन पाक हस्तियों को नमाज़ व क़ुरआन से कैसी मह़ब्बत व लगन थी कि जान की परवाह न की और नमाज़ में मश्ग़ूल रहे और एक हम हैं कि अव्वल तो नमाज़ पढ़ते ही नहीं और अगर पढ़ भी लें तो घर बार या कारोबार की फ़िक्र सर पे ऐसी सुवार होती है कि निहायत जल्दी जल्दी नमाज़ अदा करते हुवे गोया उसे सर से उतारने की कोशिश करते हैं । याद रखिये ! जल्दबाज़ी में नमाज़ पढ़ने की वज्ह से उ़मूमन नमाज़ में ऐसी ग़लतियां भी हो जाती हैं जिन की वज्ह से नमाज़ ज़ाएअ़ हो जाती है । चुनान्चे,

1.... عُیُونُ الحکایات، حصہ اوّل، ص ۳۳

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन यमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक शख़्स को देखा जो नमाज़ पढ़ते हुवे रुकूअ़ और सुजूद पूरे अदा नहीं करता था । उस से फ़रमाया : तुम ने जो नमाज़ पढ़ी अगर इसी नमाज़ की ह़ालत में इन्तिक़ाल कर जाओ तो ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के त़रीक़े पर तुम्हारी मौत वाक़ेअ़ नहीं होगी ।[1] एक और रिवायत में येह भी है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा : तुम कब से इस त़रह़ नमाज़ पढ़ रहे हो ? उस ने कहा : चालीस[40] साल से । फ़रमाया : तुम ने चालीस[40] साल से बिल्कुल नमाज़ ही नहीं पढ़ी और अगर इसी ह़ालत में तुम्हें मौत आ गई तो दीने मुह़म्मदी عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَام पर नहीं मरोगे ।[2] اَلْاَمَان وَ الْحَفِیْظ **अल्लाह** तआ़ला हमारे ईमान की ह़िफ़ाज़त फ़रमाए ।

ख़ुदाया बुरे ख़ातिमे से बचा ले
गुनाहगार है जा बलब या इलाही (वसाइले बख़्शिश)

اٰمین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

सुकून व इत़्मीनान से नमाज़ पढ़ने की ता'लीम

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मस्जिद में तशरीफ़ लाए, एक शख़्स आया और उस ने नमाज़ पढ़ी फिर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को सलाम किया, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सलाम का जवाब दिया और इरशाद फ़रमाया : जाओ नमाज़ पढ़ो क्यूंकि तुम ने नमाज़ (दुरुस्त) नहीं पढ़ी, चुनान्चे, वोह गया और इसी त़रह़ नमाज़ पढ़ी, फिर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को सलाम किया, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सलाम का जवाब दिया और इरशाद फ़रमाया : जाओ जा कर नमाज़ पढ़ो, तुम ने नमाज़

1... بخاری، کتاب الاذان، باب اذا لم یتم الرکوع، ۱/۲۷۷، حدیث: ۷۹۱
2... نسائی، کتاب السہو، باب تطفیف الصلوۃ، ص۲۲۵، حدیث: ۱۳۰۹

www.dawateislami.net

नहीं पढ़ी, इस त़रह़ तीन मरतबा हुवा तो उस शख़्स ने अ़र्ज़ की : उस ज़ात की क़सम जिस ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ह़क़ के साथ भेजा है ! मुझे ऐसी ही नमाज़ आती है, आप ही मुझे सिखा दीजिये, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब तुम नमाज़ के लिये खड़े हो तो तक्बीर कहो फिर इतना क़ुरआन पढ़ो जितना आसानी से पढ़ सको फिर इत़मीनान से रुकूअ़ करो, फिर रुकूअ़ से सर उठा कर सीधे खड़े हो जाओ, फिर इत़मीनान से सजदा करो, फिर सर उठा कर इत़मीनान से बैठ जाओ और पूरी नमाज़ इसी त़रह़ मुकम्मल करो ।[1]

नमाज़ों में मुझे हरगिज़ न हो सुस्ती कभी आक़ा
पढ़ूं पांचों नमाज़ें बा जमाअ़त या रसूलल्लाह (वसाइले बख़्शिश)

इस ह़दीसे पाक से मा'लूम हुवा कि वाजिब रह जाने की वज्ह से नमाज़ को लौटाना वाजिब है । ख़याल रहे कि भूल कर वाजिब छूट जाने पर सजदए सह्व वाजिब है और अ़मदन (या'नी जान बूझ कर) छोड़ने से नमाज़ लौटाना वाजिब । नीज़ येह भी मा'लूम हुवा कि नमाज़ में ता'दीले अरकान, या'नी इत़मीनान से अदा करना वाजिब है । क्यूंकि वोह बुज़ुर्ग जल्दी से अदा कर के आ गए थे इसी लिये नमाज़ दोबारा पढ़वाई गई, या'नी हर दफ़्आ़ नमाज़ पढ़ कर आते, सलाम अ़र्ज़ करते और लौटा दिये जाते । हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पहली ही दफ़्आ़ उन्हें नमाज़ का त़रीक़ा न सिखाया बल्कि कई बार पढ़वा कर फिर बताया ताकि येह वाक़िआ़ उन्हें याद रहे और मस्अला ख़ूब ह़िफ़्ज़ हो जाए क्यूंकि जो चीज़ मशक़्क़त व इन्तिज़ार से मिलती है वोह दिल में बैठ जाती है ।[2]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़दीसे पाक और इस की शर्ह़ से मा'लूम हुवा कि नमाज़ ठहर ठहर कर निहायत ही सुकून व इत़मीनान से अदा करनी चाहिये । ह़दीसे पाक में जो फ़रमाया गया कि **''इत़मीनान से रुकूअ़ करो**

1 . . . بخاری، کتاب الاذان، باب وجوب القراءۃ . . . الخ، ۱/۱۵۲، حدیث ۷۵۷

2....मिरआतुल मनाजीह़, 2/12 मुलख़्ख़सन व मुल्तक़त़न

www.dawateislami.net

फिर रुकूअ़ से सर उठा कर सीधे खड़े हो जाओ, फिर इत्मीनान से सजदा करो, फिर सर उठा कर इत्मीनान से बैठ जाओ'' इसी का नाम ता'दीले अरकान है । सदरुश्शरीआ़, बदरुत्तरीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی बहारे शरीअ़त में फ़रमाते हैं : ता'दीले अरकान या'नी रुकूअ़ व सुजूद व क़ौमा व जल्सा (रुकूअ़ से खड़े होने और दो सजदों के दरमियान बैठने) में कम अज़ कम एक बार "سُبْحٰنَ اللّٰہ" कहने की क़दर (मिक़्दार) ठहरना (वाजिब है) ता'दीले अरकान भूल गया (तो) सजदए सह्व वाजिब है ।[1] बहर ह़ाल वुज़ू व ग़ुस्ल के दुरुस्त त़रीक़े के साथ साथ नमाज़ के वाजिबात, मकरूहात, मुफ़्सिदात (नमाज़ को तोड़ने वाली चीज़ें) और दीगर ज़रूरी मसाइल की मा'लूमात होनी चाहिये ताकि हमारी नमाज़ें ख़राब और ज़ाएअ़ न हों क्यूंकि हर आ़क़िल व बालिग़ मुसलमान पर जिस त़रह़ नमाज़ पढ़ना फ़र्ज़ है इसी त़रह़ ह़स्बे ह़ाल नमाज़ के मसाइल सीखना भी फ़र्ज़ है ।

किताब "नमाज़ के अह़काम" का तआ़रुफ़

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही के जज़्बे के तह़्त नमाज़ के मसाइल के बारे में 499 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल निहायत ही आसान किताब ब नाम **''नमाज़ के अह़काम''** तालीफ़ फ़रमाई है । येह किताब दर ह़क़ीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के तह़रीर कर्दा (12) रसाइल का मजमूआ़ है जो कि यक़ीनन उम्मते मुस्लिमा के लिये एक अ़ज़ीम तोह़्फ़ा है । इस में वुज़ू व ग़ुस्ल के त़रीक़े से ले कर नमाज़ का त़रीक़ा, इस के फ़ज़ाइल, फ़राइज़, व वाजिबात, सुन्नतें, मकरूहात और मुफ़्सिदात तक का ज़िक्र किया गया है । इलावा अज़ीं क़ज़ा नमाज़ों का त़रीक़ा, अज़ान और जवाबे अज़ान के कलिमात व फ़ज़ाइल, नमाज़े सफ़र, नमाज़े ईद, नमाज़े जनाज़ा का त़रीक़ा और

1....बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा सिवुम, 1/518, ह़िस्सा चहारुम, 1/711

www.dawateislami.net

इस से मुतअ़ल्लिक़ ज़रूरी मसाइल भी बयान किये गए हैं । बिला शुबा येह किताब हर घर की ज़रूरत है लिहाज़ा तमाम इस्लामी भाइयों को चाहिये कि मक्तबतुल मदीना से इस किताब को हदिय्यतन ह़ासिल कर के न सिर्फ़ ख़ुद इस का मुत़ालआ़ कीजिये बल्कि अपने घर के दीगर अफ़राद को भी इस के मुत़ालए़ की तरग़ीब दिलाइये । इस्लामी बहनों के लिये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की किताब **''इस्लामी बहनों की नमाज़''** बहुत ही ज़बरदस्त किताब है, इसे इस्लामी बहनों को पढ़ना बेहद ज़रूरी है ।

अफ़्सोस फ़ी ज़माना दुन्यावी उ़लूम व फ़ुनून सीखने के लिये तो बहुत कोशिश की जाती और इस की ख़ातिर वक़्त और माल की बड़ी से बड़ी क़ुरबानी भी दी जाती है मगर नमाज़ जो कि दीन का सुतून है इस के मसाइल सीखने के लिये कोई कोशिश नहीं की जाती, ऐन मुमकिन है कि इ़ल्मे दीन से महरुमी और जल्द बाज़ी की वज्ह से हमारी नमाज़ें ज़ाएअ़ हो जाती हों और हमें पता भी न चलता हो । हमारे अस्लाफ़ व बुज़ुर्गाने दीन को नमाज़ों से दिली लगाव हुवा करता था । वोह ह़ज़रात नमाज़ के तमाम तर आदाब का ख़याल रखते हुवे फ़राइज़ तो फ़राइज़, नवाफ़िल भी निहायत ही सुकून व इत़मीनान के साथ अदा किया करते थे । आइये तरग़ीब के लिये इस ज़िम्न में बुज़ुर्गाने दीन के तीन[3] वाक़िआ़त सुनते हैं । चुनान्चे,

(1) आ'ला ह़ज़रत की नमाज़

ह़ज़रते मौलाना मुह़म्मद हुसैन चिश्ती निज़ामी फ़ख़्री رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه जिन्हें चन्द साल आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के फ़तावा लिखने की ख़िदमत ह़ासिल रही आप फ़रमाते हैं कि आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने तमाम उ़म्र लाज़िमी त़ौर पर जमाअ़त से नमाज़ पढ़ी और कैसी ही गर्मी क्यूं न हो हमेशा दस्तार (इ़मामे) और अंगरखे (कुर्ते के ऊपर से पहनने वाली एक पोशाक) के साथ नमाज़ पढ़ा करते (या'नी नमाज़ के लिये लिबास में भी ख़ुसूसी एहतिमाम फ़रमाते) । ख़ुसूसन फ़र्ज़ नमाज़ तो सिर्फ़ टोपी और कुर्ते के साथ कभी भी अदा न की । मज़ीद फ़रमाते हैं कि आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه जिस क़दर एह़तियात़ से नमाज़ पढ़ते थे, आज कल येह बात नज़र नहीं

www.dawateislami.net

आती । हमेशा मेरी दो रक्अ़त इन की एक रक्अ़त में होती थी और दूसरे लोग मेरी चार रक्अ़त में कम से कम छे[6] रक्अ़त बल्कि आठ[8] रक्अ़त भी पढ़ लिया करते थे ।[1]

हो जाएं मौला मस्जिदें आबाद सब की सब
सब को नमाज़ी दे बना या रब्बे मुस्तफ़ा (वसाइले बख़्शिश)

(2) वोह लकड़ी कहां है ?

ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल अह़वस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बयान करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन मो'तमिर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की पड़ोसन ने अपने वालिद साह़िब से पूछा : अब्बा जान ! ह़ज़रते सय्यिदुना मन्सूर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के छत पर एक लकड़ी थी वोह कहां गई ? उन्हों ने बताया बेटा ! वोह (लकड़ी नहीं थी बल्कि ख़ुद) ह़ज़रते सय्यिदुना मन्सूर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه थे जो रात को क़ियाम किया करते थे ।[2] इन्ही के बारे में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ला बिन सालिम अ़बदी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बयान करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन मो'तमिर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपनी छत पर नमाज़ पढ़ा करते थे । जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का इन्तिक़ाल हो गया तो एक लड़के ने अपनी मां से पूछा : अम्मी जान ! फुलां की छत पर खजूर का तना था वोह दिखाई नहीं दे रहा ? मां ने कहा : बेटा वोह कोई तना नहीं था बल्कि ह़ज़रते सय्यिदुना मन्सूर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفُوْر थे जो (इ़बादत किया करते थे और अब) इन्तिक़ाल फ़रमा गए हैं ।[3]

मैं पांचों नमाज़ें पढ़ूं बा जमाअ़त
हो तौफ़ीक़ ऐसी अ़त़ा या इलाही (वसाइले बख़्शिश)

(3) ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिमे असम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की नमाज़

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिमे असम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه एक मरतबा ह़ज़रते आ़सिम बिन युसूफ़ मुह़द्दिस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की मुलाक़ात के लिये तशरीफ़ ले

1....ह़याते आ'ला ह़ज़रत, 1/153 बित्तग़य्युर

2... حلیۃ الاولیاء، منصور بن معتمر، ص۴۶، رقم: ۶۲۶۹

3... حلیۃ الاولیاء، منصور بن معتمر، ص۴۶، رقم: ۶۲۶۰

www.dawateislami.net

गए तो ह़ज़रते आ़सिम बिन युसूफ़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उन से फ़रमाया कि ऐ ह़ातिम ! क्या आप नमाज़ अच्छी त़रह़ अदा करते हैं ? तो आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : जी हां । ह़ज़रते आ़सिम رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने पूछा : आप बताइये कि आप किस त़रह़ नमाज़ पढ़ते हैं ? तो ह़ज़रते ह़ातिम رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया कि जब नमाज़ का वक़्त क़रीब हो जाता है तो मैं निहायत ही कामिल व मुकम्मल त़रीक़े से वुज़ू करता हूं । फिर नमाज़ का वक़्त आ जाने पर जब मुसल्ले पर क़दम रखता हूं तो इस त़रह़ खड़ा होता हूं कि मेरे बदन का हर जोड़ अपनी जगह पर बर क़रार हो जाता है फिर मैं अपने दिल में येह तसव्वुर जमाता हूं कि ख़ानए का'बा मेरे दोनों भंवों के दरमियान और मक़ामे इब्राहीम मेरे सीने के सामने है फिर मैं अपने दिल में येह यक़ीन रखते हुवे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरी ज़ाहिरी ह़ालत और मेरे दिल में छुपे हुवे तमाम ख़यालात को जानता है इस त़रह़ खड़ा होता हूं कि गोया पुल सिरात़ पर मेरे क़दम हैं और जन्नत मेरी दाईं जानिब और जहन्नम मेरी बाईं जानिब और मलकुल मौत मेरे पीछे हैं और गोया येही नमाज़ मेरी ज़िन्दगी की आख़िरी नमाज़ है, इस के बा'द तक्बीरे तह़रीमा निहायत ही इख़्लास के साथ कहता हूं । फिर इन्तिहाई तदब्बुर और ग़ौरो फ़िक्र के साथ क़िराअत करता हूं, फिर निहायत ही तवाज़ोअ़ के साथ रुकूअ़ और गिड़ गिड़ाते हुवे इन्किसारी के साथ सजदा करता हूं । फिर इसी त़रह़ पूरी नमाज़ निहायत ही ख़ुज़ूअ़ व ख़ुशूअ़ के साथ अदा करता हूं येह सुन कर ह़ज़रते आ़सिम رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ह़ैरत के साथ पूछा कि ऐ ह़ातिमे असम رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ क्या वाक़ेई आप हमेशा और हर वक़्त इसी त़रह़ से नमाज़ पढ़ते हैं ? तो आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने जवाब दिया कि जी हां ! तीस[30] बरस से मैं हमेशा और हर वक़्त इसी त़रह़ नमाज़ अदा करता हूं ।[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अवक़ात के अन्दर ही पढ़ूं सारी नमाज़ें

अल्लाह ! इ़बादत में मेरे दिल को लगा दे (वसाइले बख़्शिश)

1 ...روح البیان، ۱/۳۳

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि हमारे बुज़ुर्गाने दीन किस क़दर ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़, ज़ौक़ो शौक़ और यक्सूई के साथ त़वील नमाज़ें पढ़ा करते थे और एक हम हैं कि अगर नमाज़ पढ़ने की सआ़दत मिल भी जाएं तो निहायत सुस्ती, काहिली और बे तवज्जोगी के साथ इधर उधर देखते हुवे नमाज़ अदा करते हैं जिस की वज्ह से ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ सिरे से ह़ासिल ही नहीं हो पाता ।

किस रुक्न में कहां नज़र होनी चाहिये ?

ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, मौलाना सय्यिद अय्यूब अ़ली रज़वी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का बयान है कि (एक रोज़) बा'द नमाज़े ज़ोहर आ'ला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن मस्जिद में वज़ीफ़ा पढ़ रहे थे कि एक अजनबी साह़िब ने सामने आ कर निय्यत बांधी । जब रुकूअ़ किया तो गर्दन उठाए हुवे सजदागाह को देखते रहे । फ़ारिग़ होने पर आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने पास बुला कर दरयाफ़्त किया कि रुकूअ़ की ह़ालत में इस क़दर गर्दन आप ने क्यूं उठाई थी ? उन्हों ने अ़र्ज़ किया हुज़ूर सजदे की जगह को देख रहा था तो फ़रमाया सजदे में क्या कीजियेगा (या'नी हर ह़ालत में सजदे की जगह पर नज़र नहीं होनी चाहिये) फिर फ़रमाया : ब ह़ालते क़ियाम, नज़र सजदागाह पर और ब ह़ालते रुकूअ़ पाउं की उंगलियों पर और ब ह़ालते तस्बीह़ (रुकूअ़ से खड़े हो कर) सीने पर और ब ह़ालते सुजूद नाक पर और ब ह़ालते क़ुऊ़द (अत्तह़िय्यात वग़ैरा पढ़ते हुवे) अपनी गोद पर नज़र रखनी चाहिये नीज़ सलाम फेरते वक़्त कातिबीन (आ'माल लिखने वाले फ़िरिश्तों) को मल्हूज़ रखते हुवे अपने शानों (कन्धों) पर नज़र होनी चाहिये ।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि नमाज़ में इधर उधर देखने से गुरैज़ करना चाहिये । याद रखिये ! नमाज़ में इधर उधर देखने से तवज्जोह बटती है और दिल नमाज़ के बजाए दूसरी चीज़ों में मश्ग़ूल हो जाता

1....ह़यातेआ'ला ह़ज़रत, 1/303 बित्तग़य्युर

www.dawateislami.net

है शायद इसी वज्ह से नमाज़ पढ़ने के बा वुजूद न तो हमें इस की लज़्ज़त महसूस होती है और न ही दिल में इस का ह़क़ीक़ी शौक़ पैदा होता है जिस के नतीजे में मा'मूली सर दर्द या हल्की फुलकी बीमारी या सिर्फ़ सुस्ती काहिली की वज्ह से आए दिन हमारी नमाज़ें क़ज़ा हो जाती हैं बल्कि बा'ज़ ऐसे लोग भी हैं कि जब उन की एक या चन्द एक नमाज़ें रह जाएं तो हफ़्तों हफ़्तों बल्कि महीनों महीनों तक जान बूझ कर नमाज़ छोड़ देते हैं और अगर कोई इस्लामी भाई उन पर इनफ़िरादी कोशिश करते हुवे नमाज़ों की तरग़ीब दिलाए तो कहते हैं "अब اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ अगले जुमुआ़ से दोबारा नमाज़ें पढ़ना शुरूअ़ करूंगा या रमज़ान से बा क़ाइदा नमाज़ों का एहतिमाम करूंगा" यूं गोया किसी क़िस्म की शर्मो झिजक के बिग़ैर बड़ी बहादुरी के साथ مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ इस बात का इक़रार किया जाता है कि नमाज़ें तर्क करने का येह कबीरा गुनाह, मैं जुमुआ़ के दिन तक या रमज़ानुल मुबारक तक मुसलसल जारी रखूंगा। यक़ीनन येह सब कुछ ख़ौफ़े ख़ुदा और शौक़े इबादत न होने का वबाल है वरना जिस के दिल में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ और इबादत का ज़ौक़ो शौक़ होता है वोह हर ह़ाल में नमाज़ों की पाबन्दी करता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी से बचता है। हमारे अस्लाफ़ व बुज़ुर्गाने दीन शदीद बीमारी, ज़ईफ़ुल उ़म्री या बहुत ज़ियादा जिस्मानी कमज़ोरी के बा वुजूद भी नमाज़ों से ग़फ़्लत न किया करते थे बल्कि जब तक कोई शरई मजबूरी न होती नमाज़े बा जमाअ़त की पाबन्दी किया करते थे। जैसा कि

बीमारी के बा वुजूद नमाज़ की अदाएगी

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی कहते हैं : हमें ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन मसरफ़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के बारे में उन के पड़ोसी ने बताया कि वोह बीमार हैं। हम इयादत के लिये गए तो ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैद رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उन से कहा : "उठिये नमाज़ पढ़ लीजिये, मुझे मा'लूम है कि

www.dawateislami.net

आप नमाज़ से महब्बत करते हैं।" येह सुनते ही आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه नमाज़ के लिये खड़े हो गए।(1)

नमाज़े बा जमाअ़त की बे मिसाल पाबन्दी

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अ़रअ़रह رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना यह़या बिन क़त्तान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان जब ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम आ'मश رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का ज़िक्र करते तो फ़रमाते : वोह बहुत इबादत गुज़ार थे और नमाज़े जमाअ़त और पहली सफ़ की पाबन्दी किया करते थे। आप ने येह भी फ़रमाया कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम आ'मश رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه इस्लाम की निशानी (या'नी निहायत ज़ई़फ़ुल उ़म्र) थे और आप दीवार का सहारा लेते लेते पहली सफ़ तक पहुंच जाया करते थे।(2)

मैं साथ जमाअ़त के पढ़ूं सारी नमाज़ें
अल्लाह! इबादत में मेरे दिल को लगा दे (वसाइले बख़्शिश)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه एक मरतबा सख़्त बीमार हुवे, बिल आख़िर ऑपरेशन का त़ै हुवा। चुनान्चे, 21 दिसम्बर सिने 2002 ईसवी को राजपुताना अस्पताल (ह़ैदराबाद) में दाख़िल (एडमिट) हुवे। डॉक्टर साह़िब ने दो पहर या शाम को ऑपरेशन का वक़्त देना चाहा तो फ़रमाया कि मैं चाहता हूं कि मेरी कोई नमाज़ बे होशी में रह न जाए। लिहाज़ा नमाज़े इ़शा के बा'द का त़ै हुवा। ऑपरेशन से पहले दोनों हाथ टेबल के अत़राफ़ में बांध दिये गए और बा'द में जैसे ही खोले गए आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने फ़ौरन क़ियामे नमाज़ की त़रह़ बांध लिये। अभी नीम बे होशी त़ारी थी, दर्द से कराहने या चिल्लाने के बजाए ज़बान पर ज़िक्रो दुरूद और मुनाजात का सिलसिला जारी हो गया, यकायक आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने पूछा : क्या नमाज़े फ़ज्र का वक़्त हो गया ? अगर हो

1 ... حلیۃ الاولیاء، طلحۃ بن مصرف، ۵/۲۱، رقم: ۶۱۷۱

2 ... حلیۃ الاولیاء، سلیمان الاعمش، ۵/۵۸، رقم: ۶۳۱۰

www.dawateislami.net

गया है तो मुझे पाक कर दिया जाए اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ मैं फ़ज्र की नमाज़ पढ़ूंगा। उन को बताया गया कि फ़ज्र को अभी काफ़ी देर है।[1]

आ'ला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن एक इस्तिफ़्ता का जवाब लिखने से पहले जवाब में ताख़ीर की वज्ह बयान करते हुवे तह़रीर फ़रमाते हैं : आप की रजिस्टरी 15 रबीउ़ल आख़िर शरीफ़ को आई, मैं 12 रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ की मजलिस पढ़ कर (या'नी बयान कर के) शाम ही से ऐसा अ़लील (या'नी बीमार) हुवा कि कभी न हुवा था। मैं ने वसिय्यत नामा लिखवा दिया था। आज तक येह ह़ालत है कि दरवाज़े से मुत्तसिल मस्जिद है, चार आदमी कुरसी पर बिठा कर मस्जिद ले जाते और लाते हैं।[2]

मैं साथ जमाअ़त के पढ़ूं सारी नमाज़ें
अल्लाह! इ़बादत में मेरे दिल को लगा दे (वसाइले बख़्शिश)

سُبْحٰنَ اللہ عَزَّوَجَلَّ आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ऐसी सख़्त अ़लालत (बीमारी) में भी जमाअ़त छोड़ कर घर में तन्हा नमाज़ पढ़ लेना गवारा न किया ह़ालांकि इतनी शदीद अ़लालत बिला शुबा तर्के जमाअ़त के लिये उ़ज़्र है। बानिये अल जामिअ़तुल अशरफ़िय्या ह़ाफ़िज़े मिल्लत मौलाना शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुह़द्दिस मुरादाबादी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने आ'ला ह़ज़रत की इसी बीमारी का ह़ाल बयान किया कि "एक रोज़ मस्जिद ले जाने वाला कोई न था, जमाअ़त का वक़्त हो गया, त़बीअ़त परेशान (हो गई), नाचार ख़ुद ही किसी त़रह़ घिसटते हुवे (मस्जिद में) ह़ाज़िर हुवे और बा जमाअ़त नमाज़ अदा की।" आज सिह़्ह़त व त़ाक़त और तमाम तर सुहूलत के बा वुजूद तर्के नमाज़ और तर्के जमाअ़त के माह़ोल में येह वाक़िआ़ एक अ़ज़ीम दर्से इ़ब्रत है। लिहाज़ा हमें चाहिये कि मा'मूली बीमारी, दर्दे सर या थोड़ी बहुत परेशानी की बिना पर नमाज़ तर्क करने के बजाए अपने आप को मस्जिद की पहली सफ़ में तक्बीरे ऊला के साथ नमाज़े बा जमाअ़त का पाबन्द बनाएं। याद रखिये कि बिला उ़ज़्रे शरई मस्जिद की जमाअ़त छोड़ना गुनाह है। चुनान्चे,

1 अमीरे अहले सुन्नत की ऑपरेशन की ईमान अफ़रोज़ झलकियां, स. 1-3 मुलख़्ख़सन

2....फ़तावा रज़विय्या, 9/547

www.dawateislami.net

बहारे शरीअ़त में है : आ़क़िल, बालिग़, हुर्र (या'नी आज़ाद और) क़ादिर पर जमाअ़त वाजिब है, बिला उ़ज़्र एक बार भी छोड़ने वाला गुनहगार और मुस्तह़िक़ सज़ा है और कई बार तर्क करे, तो फ़ासिक़ मर्दूदुश्शहादह (है) और इस को सख़्त सज़ा दी जाएगी।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस में कोई शक नहीं कि इन्सान का सब से बड़ा दुश्मन शैत़ान है जो हमेशा हमेशा के लिये बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ से धुतकार दिया गया है। शैत़ाने लईन कभी भी येह नहीं चाहेगा कि वोह ख़ुद तो रब عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी की वज्ह से जहन्नम में जाए और हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की फ़रमां बरदारी कर के जन्नत के ह़क़दार बन जाएं लिहाज़ा वोह हर आन हमें नमाज़ व रोज़े की पाबन्दी और दीगर इबादात की बजा आवरी से रोकने की कोशिशों में लगा रहता है, पहले पहल नवाफ़िल व मुस्तह़ब्बात से इन्सान को रोकता है फिर सुन्नतें छूटने लगती हैं इस के बा'द वाजिबात की बारी आती है और फिर बिल आख़िर फ़राइज़ तक से मह़रूम कर देता है। अगर आज हम जमाअ़त तर्क करेंगे तो कल को शैत़ान के कहने पर नमाज़ों ही से हाथ धो बैठेंगे। येही वज्ह है कि हमारे अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام अव्वल तो जमाअ़त तर्क ही न करते और अगर किसी शरई उ़ज़्र की बिना पर कभी जमाअ़त छूट भी जाती तो उन्हें इस क़दर अफ़्सोस होता कि वोह मजबूरन छूट जाने वाली इस जमाअ़त की भी अपने त़ौर पर तलाफ़ी की कोशिश शुरूअ़ कर देते। जैसा कि

जमाअ़त छूटने पर रात भर इबादत

ह़ज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) जब कभी (किसी उ़ज़्रे शरई के सबब) इशा की जमाअ़त में ह़ाज़िर न हो पाते तो सारी रात इबादत में गुज़ार देते।[2]

1 बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा सिवुम, स. 1/582

2....अल्लाह वालों की बातें, 1/533

www.dawateislami.net

बहर हाल नमाज़ हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है, इस को पढ़ना दुन्या व आख़िरत की सआ़दतों का ज़रीआ़ है और छोड़ देना गुनाहे कबीरा और दुन्या व आख़िरत की महरूमियों का सबब है। लिहाज़ा नमाज़ों की अदाएगी करते हुवे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस पर इस्तिक़ामत की दुआ़ भी करनी चाहिये। कुरआने पाक में जा बजा न सिर्फ़ नमाज़ का हुक्म दिया गया है बल्कि अज्रो सवाब का ज़िक्र कर के इस की तरग़ीब दिलाई गई है। आइये इस जिम्न में चार फ़रामीने ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ सुनिये।

नमाज़ के मुतअ़ल्लिक़ 4 फ़रामीने ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ

وَالْمُقِيْمِيْنَ الصَّلٰوةَ وَالْمُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَ الْمُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ اُولٰٓئِكَ سَنُؤْتِيْهِمْ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿۱۶۲﴾ (پ۶،النساء:۱۶۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और नमाज़ क़ाइम रखने वाले और ज़कात देने वाले और* **अल्लाह** *और क़ियामत पर ईमान लाने वाले ऐसों को अ़न क़रीब हम बड़ा सवाब देंगे।*

وَاَنْ اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّقُوْهُ ؕ وَهُوَ الَّذِيْٓ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿۷۲﴾ (پ۷،الانعام:۷۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और येह कि नमाज़ क़ाइम रखो और उस से डरो और वोही है जिस की त़रफ़ तुम्हें उठना है।*

حٰفِظُوْا عَلَى الصَّلَوٰتِ وَالصَّلٰوةِ الْوُسْطٰى ۗ وَ قُوْمُوْا لِلّٰهِ قٰنِتِيْنَ ﴿۲۳۸﴾ (پ۲،البقرة:۲۳۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *निगहबानी करो सब नमाज़ों की और बीच की नमाज़ की और खड़े हो* **अल्लाह** *के हुज़ूर अदब से।*

وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَارْكَعُوْا مَعَ الرّٰكِعِيْنَ ﴿۴۳﴾ (پ۱،البقرة:۴۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात दो और रुकूअ़ करने वालों के साथ रुकूअ़ करो।*

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِي आख़िरी आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : इस

www.dawateislami.net

आयत में नमाज़ व ज़कात की फ़र्ज़िय्यत का बयान है और इस त़रफ़ भी इशारा है की नमाज़ों को उन के हुक़ूक़ की रिआ़यत और अरकान की हि़फ़ाज़त के साथ अदा करो । **मस्अला :** (इसी आयते मुबारका में) जमाअ़त की तरग़ीब भी है ।

तर्के जमाअ़त की वईद

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास और ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمْ اَجْمَعِیْن से मरवी है कि हम ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मिम्बर पर येह फ़रमाते हुवे सुना :

لَیَنْتَهِیَنَّ اَقْوَامٌ عَنْ وَدْعِهِمُ الْجَمَاعَاتِ اَوْ لَیَخْتِمَنَّ اللّٰهُ عَلٰی قُلُوْبِهِمْ ثُمَّ لَیَكُوْنُنَّ مِنَ الْغَافِلِیْنَ

लोग जमाअ़त छोड़ने से बाज़ आ जाएं वरना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन के दिलों पर मोहर लगा देगा फिर वोह ग़ाफ़िलों में से हो जाएंगे ।[1]

एक और ह़दीसे पाक में येही वईद जुमुए़ की नमाज़ तर्क करने के बारे में आई है, चुनान्चे,

नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : लोग जुमुआ़ छोड़ने से बाज़ रहें वरना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन के दिलों पर मोहर कर देगा फिर वोह ग़ाफ़िलों में से हो जाएंगे ।[2]

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الْمَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : ख़याल रहे कि यहां रूए सुख़न (गुफ़्तगू का रुख़) या तो उन मुनाफ़िक़ों की त़रफ़ है जो जुमुआ़ (या आ़म नमाज़ों) में ह़ाज़िर न होते थे या आयिन्दा आने वाले मुसलमानों की त़रफ़ है वरना कोई सह़ाबी तारिके जुमुआ़ (या तारिके नमाज़ या तारिके जमाअ़त) न थे ।[3]

1 . . . ابنِ ماجہ، کتاب المساجد والجماعات، باب التغلیظ فی التخلف عن الجماعۃ، ۱/۴۳۶، حدیث: ۷۹۴

2 . . . مسلم، کتاب الجمعۃ، باب التغلیظ فی ترک الجمعۃ، ص ۴۳۰، حدیث: ۸۶۵

3 मिरआतुल मनाजीह़, 2/330

www.dawateislami.net

मैं पांचों नमाज़ें पढ़ूं बा जमाअ़त
हो तौफ़ीक़ ऐसी अ़ता या इलाही (वसाइले बख़्शिश)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुबारक है : [1] جُعِلَتْ قُرَّةُ عَيْنِيْ فِي الصَّلٰوةِ मेरी आंखों की ठन्डक नमाज़ में रखी गई है। भला वोह कौन सा आ़शिक़े रसूल होगा जो अपने मह़बूब की आंखों को राह़त और ठन्डक न पहुंचाना चाहे ? लिहाज़ा हमें चाहिये कि नमाज़ की पाबन्दी करते हुवे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आंखें ठन्डी करें और अपने आप को अह़ादीसे मुबारका में बयान कर्दा नमाज़ के फ़ज़ाइल व बरकात का ह़क़दार बनाएं। सरकारे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नमाज़ क़ाइम रखने और नमाज़े बा जमाअ़त के लिये मस्जिद में ह़ाज़िर होने की बारहा तरग़ीब भी दिलाई और इस के फ़ज़ाइल भी बयान किये। आइये तरग़ीब के लिये चन्द अह़ादीसे मुबारका सुनते हैं।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया اَحَبُّ الْبِلَادِ اِلَى اللّٰهِ مَسَاجِدُهَا وَ اَبْغَضُ الْبِلَادِ اِلَى اللّٰهِ اَسْوَاقُهَا आबादियों में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक सब से प्यारी जगह मस्जिदें और सब से बुरी जगह बाज़ार हैं।[2]

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

مَنْ غَدَا اِلَى الْمَسْجِدِ اَوْ رَاحَ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهٗ فِي الْجَنَّةِ نُزُلًا كُلَّمَا غَدَا اَوْ رَاحَ जो शख़्स सुब्ह़ो शाम मस्जिद में जाए तो जितनी मरतबा भी जाएगा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जन्नत में मेहमानी तय्यार फ़रमाएगा।[3]

1 ...نسائی، کتاب عشرۃ النساء، باب حب النساء، ص ۶۴۴، حدیث: ۳۹۴۶

2 ...مسلم، کتاب المساجد... الخ، باب فضل الجلوس فی مصلاہ... الخ، ص ۳۳۷، حدیث: ۶۷۱

3 ...مسلم، کتاب المساجد... الخ، باب المشی الی الصلاۃ... الخ، ص ۳۳۶، حدیث: ۶۶۹

www.dawateislami.net

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : سَبْعَةٌ يُظِلُّهُمُ اللهُ فِي ظِلِّهٖ يَوْمَ لَا ظِلَّ اِلَّا ظِلُّه जिस दिन अ़र्शे इलाही के सिवा कोई साया न होगा उस दिन सात[7] क़िस्म के अफ़राद को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने अ़र्श के साए में रखेगा। फिर इस के बा'द उन सात अफ़राद का ज़िक्र करते हुवे येह भी इरशाद फ़रमाया : وَرَجُلٌ كَانَ قَلْبُهٗ مُعَلَّقًا بِالْمَسْجِدِ اِذَا خَرَجَ مِنْهُ حَتّٰى يَعُوْدَ اِلَيْهِ वोह शख़्स (भी रोज़े क़ियामत अ़र्शे इलाही के साए में होगा) जिस का दिल मस्जिद से चले जाने के बा'द भी दोबारा आने तक मस्जिद ही में लगा रहे।[(1)]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि मस्जिद से दिल लगाने, नमाज़ की पाबन्दी करने और जमाअ़त के साथ नमाज़ पढ़ने के कैसे कैसे फ़ज़ाइल व बरकात हैं, लिहाज़ा हमें चाहिये कि रिज़ाए इलाही ह़ासिल करने के लिये हमेशा बा जमाअ़त नमाज़ अदा किया करें ख़्वाह इस की ख़ातिर हमें कितनी ही मशक़्क़त बरदाश्त करनी पड़े, आज कल अगर मस्जिद हमारे घर से थोड़ी दूर हो तो हम मा'मूली सी थकावट या सुस्ती की वज्ह से न सिर्फ़ जमाअ़त तर्क करने के गुनाह में पड़ते हैं बल्कि नमाज़े बा जमाअ़त जैसी अ़ज़ीम सआ़दत से महरूम हो जाते हैं। याद रखिये कि जो नेक काम जितना ज़ियादा दुश्वार होता है उस का सवाब भी उतना ही ज़ियादा होता है और फिर नमाज़ की ख़ातिर राहे ख़ुदा में उठने वाले क़दमों की तो बात ही कुछ और है। जैसा कि ह़दीसे पाक में फ़रमाया गया : اَلْاَبْعَدُ فَالْاَبْعَدُ مِنَ الْمَسْجِدِ اَعْظَمُ اَجْرًا मस्जिद से दूर वाले को सवाब ज़ियादा मिलता है और जो इस से भी ज़ियादा दूर वाला है उसे इस से भी ज़ियादा सवाब मिलता है (गोया जैसे जैसे दूरी बढ़ती जाएगी सवाब में इज़ाफ़ा होता चला जाएगा)।[(2)]

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि मस्जिदे नबवी عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَ السَّلَام के गिर्द कुछ ज़मीनें ख़ाली हुईं तो बनी सलमह (क़बीले के ह़ज़राते सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) ने चाहा कि मस्जिद के क़रीब आ जाएं, येह

1 ... ترمذی، کتاب الزہد، باب ماجاء فی الحب فی اللہ، ۴/۱۸۴، حدیث: ۲۳۹۸ ماخوذا

2 ... ابنِ ماجہ، کتاب المساجد والجماعات، باب الابعد فابعد... الخ، ۱/۴۳۱، حدیث: ۷۸۲

www.dawateislami.net

ख़बर जब नबिय्ये करीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم को पहुंची तो फ़रमाया : मुझे ख़बर पहुंची है कि तुम मस्जिद के क़रीब मुन्तक़िल होना चाहते हो । अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) जी हां हमारा इरादा तो येही है, फ़रमाया : ऐ बनी सलमह ! अपने घरों ही में रहो, तुम्हारे क़दम लिखे जाएंगे । दोबारा येही इरशाद फ़रमाया, बनी सलमह कहते हैं, लिहाज़ा हम को घर बदलना पसन्द न आया (या'नी इस बिशारत की वज्ह से हम ने घर तब्दील कर के मस्जिद के क़रीब रिहाइश इख़्तियार करने का इरादा तर्क कर दिया) ।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर्चे जमाअ़त ह़ासिल करना बहुत ही ज़ियादा क़ाबिले फ़ज़ीलत अ़मल है मगर येह भी याद रहे कि जमाअ़त या रक्अ़त ह़ासिल करने की ख़ातिर मस्जिद के अन्दर दौड़ना मन्अ़ है, आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه मल्फ़ूज़ात शरीफ़ में मस्जिद के अह़काम व आदाब बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं : मस्जिद में दौड़ना या ज़ोर से क़दम रखना जिस से धमक पैदा हो मन्अ़ है ।[2]

लिहाज़ा हमें नमाज़ के लिये ऐसे अवक़ात में आना चाहिये कि ब आसानी जमाअ़त मिल जाए और मस्जिद में भागना भी न पढ़े । बा'ज़ लोग अज़ान के बा'द भी अपनी गुफ़्तगू या दीगर काम काज जारी रखते हैं और फिर जमाअ़त खड़ी होने के बा'द उसे ह़ासिल करने के लिये मस्जिद में भागते दौड़ते नज़र आते हैं, ह़ालांकि ह़दीसे मुबारका में इस से मन्अ़ किया गया है । चुनान्चे, सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : لَا تَاْتُوا الصَّلَاةَ وَاَنْتُمْ تَسْعَوْنَ وَاْتُوْهَا وَعَلَيْكُمُ السَّكِيْنَةُ فَمَا اَدْرَكْتُمْ فَصَلُّوْا وَمَا فَاتَكُمْ فَاَتِمُّوْا नमाज़ के लिये भागते हुवे न आया करो बल्कि इत्मीनान व सुकून के साथ (मा'मूल के मुत़ाबिक़ चलते हुवे) आया करो फिर जितनी रक्अ़तें मिल जाएं जमाअ़त के साथ पढ़ लो और जो फ़ौत हो जाएं उन्हें (इमाम के सलाम फेरने के बा'द) मुकम्मल कर लो ।[3]

1 ... مسلم، کتاب المساجد... الخ، باب فضل کثرۃ الخطأ الی المسجد، ص۳۳۵، حدیث: ۲۸۰-۲۸۱

2 मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 318

3 ... مسند امام احمد، مسند ابی ھریرہ، ۳/۲۲، حدیث: ۷۲۳۴

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कुरआनो ह़दीस में जहां नमाज़ पढ़ने के बहुत ज़ियादा फ़ज़ाइलो बरकात बयान किये गए हैं वहां नमाज़ क़ज़ा करने या तर्क कर देने की सख़्त वईदें भी बयान की गई हैं। चुनान्चे, पारह 16 सूरए मरयम की आयत नम्बर 59 में इरशाद होता है :

فَخَلَفَ مِنۡۢ بَعۡدِهِمۡ خَلۡفٌ اَضَاعُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوٰتِ فَسَوۡفَ يَلۡقَوۡنَ غَيًّا ﴿۵۹﴾ (پ۱۶، سورۂ مریم:۵۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो उन के बा'द उन की जगह वोह ना ख़लफ़ आए जिन्हों ने नमाज़ें गंवाई (ज़ाएअ़ कीं) और अपनी ख़्वाहिशों के पीछे हुवे तो अ़न क़रीब वोह दोज़ख़ में "**ग़य्य**" का जंगल पाएंगे।*

ख़ौफ़नाक वादी का हौलनाक कूंआं :

बयान कर्दा आयते मुबारका में "**ग़य्य**" का तज़किरा है और इस से मुराद जहन्नम की एक वादी है। सदरुश्शरीआ़ बदरुत्तरीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡقَوِی फ़रमाते हैं : "**ग़य्य**" जहन्नम में एक वादी है जिस की गर्मी और गहराई सब से ज़ियादा है, इस में एक कूंआं है जिस का नाम "**हब-हब**" है, जब जहन्नम की आग बुझने पर आती है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस कूंएं को खोल देता है जिस से वोह (या'नी जहन्नम की आग) ब दस्तूर भड़कने लगती है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : كُلَّمَا خَبَتۡ زِدۡنٰهُمۡ سَعِيۡرًا ﴿۹۷﴾ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जब कभी बुझने पर आएगी हम उसे और भड़का देंगे।[1] (मज़ीद फ़रमाते हैं कि) येह कूंआं बे नमाज़ियों और ज़ानियों और शराबियों और सूदख़ोरों और मां-बाप को ईज़ा (या'नी तक्लीफ़) देने वालों के लिये है।[2]

याद रखिये ! एक भी नमाज़ जान बूझ कर छोड़ देना कबीरा गुनाह है। फ़तावा रज़विय्या जिल्द 9, सफ़ह़ा 158 पर है : जिस ने क़स्दन (या'नी जान

1 ... پ۱۵، بنی اسرآئیل:۹۷

2 बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा सिवुम, स. 1/434

www.dawateislami.net

बूझ कर सिर्फ़) एक वक़्त की (नमाज़ भी) छोड़ी, हज़ारों बरस जहन्नम में रहने का मुस्तहिक़ हुवा, जब तक तौबा न करे और इस की क़ज़ा न कर ले।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अन्दाज़ा लगाइये कि जब एक नमाज़ जान बूझ कर छोड़ने पर हज़ारों साल तक जहन्नम में रहना पड़ेगा तो जो शख़्स दिन भर की तमाम नमाज़ें जान बूझ कर तर्क कर देता हो बल्कि वोह इस ख़स्लते बद का आ़दी हो और नमाज़ बिल्कुल ही न पढ़ता हो तो वोह किस क़दर सख़्त अ़ज़ाब में मुब्तला रहेगा। लिहाज़ा जल्द से जल्द बल्कि आज ही नमाज़ें छोड़ने के गुनाहे कबीरा से सच्ची पक्की तौबा कर लीजिये नीज़ बाक़ाइदगी से नमाज़ों का एहतिमाम करने के साथ साथ क़ज़ा नमाज़ों की अदाएगी की निय्यत भी कीजिये वरना याद रखिये कि जहन्नम का अ़ज़ाब किसी सूरत भी बदाश्त न हो सकेगा। मन्क़ूल है कि जिस शख़्स को जहन्नम का सब से हल्का अ़ज़ाब दिया जाएगा तो उस अ़ज़ाब की तक्लीफ़ उसे इतनी होगी कि वोह येह गुमान करेगा कि सब से ज़ियादा तक्लीफ़ देह अ़ज़ाब मुझे ही दिया जा रहा है। हांलाकि मुआ़मला इस के बर ख़िलाफ़ होगा। हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا रिवायत करते हैं कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि दोज़ख़ियों में सब से हल्का अ़ज़ाब जिस को होगा उसे आग के जूते पहनाए जाएंगे जिन से उस का दिमाग़ खोलने लगेगा।[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जामिअ़तुल मदीना का तआ़रुफ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नमाज़ों और दीगर नेक कामों में इस्तिक़ामत हासिल करने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्तगी निहायत मुफ़ीद है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ आज के इस पुर फ़ितन दौर में दा'वते इस्लामी का मदनी माहोल बहुत ही अ़ज़ीम ने'मत है जिस पर रब तआ़ला का जितना भी शुक्र अदा किया जाए कम है। लिहाज़ा आप से मदनी

1 ... بخاری، باب صفۃ الجنۃ والنار، ۴/۲۶۲، حدیث: ۶۵۶۱

www.dawateislami.net

इल्तिजा है कि दा'वते इस्लामी के महके महके मदनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दुन्या व आख़िरत की ढेरों भलाइयां हासिल होंगी। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी ता दमे तहरीर 97 से ज़ाइद शो'बाजात में सुन्नतों की ख़िदमत में मसरूफ़े अमल है उन्ही में से एक शो'बा जामिअ़तुल मदीना भी है। शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के मुक़द्दस जज़्बे के तह़्त इल्मे दीन को आ़म करने के लिये दा'वते इस्लामी के ज़ेरे एहतिमाम जामिअ़तुल मदीना की सब से पहली शाख़ 1995 ईसवी में न्यूं कराची के अ़लाक़े गोधरा कॉलोनी बाबुल मदीना (कराची) में खोली गई और अब तक اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दुन्या के मुख़्तलिफ़ मुमालिक मसलन पाकिस्तान, हिन्द, जुनूबी अफ़्रीक़ा, इंग्लेंड, नेपाल और बंगला देश में वग़ैरा जामिअ़तुल मदीना लिलबनीन, और लिलबनात क़ाइम हैं, जिन में हज़ारों इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इल्मे दीन ह़ासिल कर के न सिर्फ़ अपनी इल्मी प्यास बुझा रहे हैं बल्कि दूसरों को भी फ़ैज़ाने इल्म से मुनव्वर करने में मसरूफ़ हैं। इन जामिअ़तुल मदीना की ख़ुसूसिय्यत है कि दीनी ता'लीम से आरास्ता करने के साथ साथ त़लबा की अख़्लाक़ी और रूह़ानी तर्बिय्यत भी की जाती है लिहाज़ा आप भी अपनी अवलाद को जामिअ़तुल मदीना में दाख़िल करवा कर उन की और अपनी दुन्या व आख़िरत को बेहतर बनाएं।

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल की क्या ख़ूब बहारें हैं आइये सुनिये और ईमान ताज़ा कीजिये।

फ़िल्म बीनी का शौक़ीन, आ़लिम कैसे बना ?

बाबुल मदीना कराची के एक मदनी इस्लामी भाई (उ़म्र तक़्रीबन 32 साल) अपनी दास्ताने इ़श्रत के ख़ातिमे के अह़वाल कुछ यूं बयान करते हैं : दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता होने से पहले मैं गुनाहों की वादी में सर गर्दां था। अफ़्सोस ! कि मेरा उठना बैठना भी ऐसे लोगों में था जो त़रह़ त़रह़ के गुनाहों में मुलव्वस थे। हम सब दोस्त मिल कर फ़िल्में देखा करते

www.dawateislami.net

थे । ऐसी ही एक शाम थी, मैं अपने दोस्त के घर से फ़िल्म देख कर घर की त़रफ़ रवां दवां था कि रास्ते में सब्ज़ इ़मामे वाले एक इस्लामी भाई ने मुझे रोक लिया और इनफ़िरादी कोशिश करते हुवे आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करने की दरख़्वास्त की । मैं ने नफ़्स की पुकार पर बहाना बनाते हुवे कहा : मैं अकेला कैसे जाऊं, मेरा कोई दोस्त भी तो साथ हो । उस इस्लामी भाई ने मिठास से तर बतर लहजे में जवाब दिया : मैं हूं ना आप का दोस्त । उन का मह़ब्बत भरा अन्दाज़ देख कर मुझ से इन्कार न हो सका । चुनान्चे, मैं राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का मुसाफ़िर बन गया मदनी क़ाफ़िले में मेरे शबो रोज़ इ़बादत में गुज़रे, मैं गुनाहों की आलूदगी से दूर रहा । **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ و صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ज़िक्र मेरे कानों में रस घोलने लगा । मेरे दिलो दिमाग़ को ताज़गी मिली । आख़िरी दिन जब रुख़्सत से पहले इख़्तितामी दुआ़ मांगी गई तो मेरी आंखों की वादियों से आंसूओं के चश्मे बहने लगे । मैं ने अपने गुनाहों से तौबा की और अपने सर पर सब्ज़ सब्ज़ इ़मामा शरीफ़ सजा लिया । मदनी क़ाफ़िले से वापस आने के बा'द मैं ने बुरे दोस्तों की सोह़बत से कनारा कशी इख़्तियार कर ली और मेरे शबो रोज़ दा'वते इस्लामी के पाकीज़ा मदनी माह़ोल में बसर होने लगे । फिर फ़ैज़ाने मुर्शिद की बारिश मुझ पर छमा छम बरसी और मैं ने जामिअ़तुल मदीना बाबुल मदीना कराची के शो'बए दर्से निज़ामी में दाख़िला ले लिया । सिने 2000 ईसवी में अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के हाथों दस्तारे फ़ज़ीलत अपने सर पर सजाई । (ता दमे तह़रीर) मुझे जामिअ़तुल मदीना में तदरीस करते हुवे तक़रीबन 11 साल हो गए हैं । इस के साथ साथ रुक्ने काबीना मजलिसे साबिता़ बिल उ़लमा वल मशाइख़ की ज़िम्मेदारी भी मिली हुई है ।

दा'वते इस्लामी की क़य्यूम दोनों जहां में मच जाए धूम
इस पर फ़िदा हो बच्चा बच्चा या अल्लाह मेरी झोली भर दे

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो । آمین

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की बरकत से फ़िल्म बीनी का शौक़ीन नौजवान, दीनी कुतुब के मुत़ालए का शौक़ीन बन गया और न सिर्फ़ आ़लिम बल्कि दूसरों को इल्मे दीन सिखाने वाला बन गया।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नौशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।

(مشکاۃ المصابیح، کتاب الایمان، باب الاعتصام بالکتاب والسنۃ، ۱/۹۷، حدیث: ۱۷۵)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा
जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आइये ! शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **के रिसाले "163 मदनी फूल" से मिस्वाक के मदनी फूल सुनते हैं।**

पहले दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा हों : ۞ दो रक्अ़त मिस्वाक कर के पढ़ना बिग़ैर मिस्वाक की 70 रक्अ़तों से अफ़्ज़ल है। (اَلتَّرغِيب وَالتَّرهِيب، ۱/۱۰۲، حدیث: ۱۸) ۞ मिस्वाक का इस्ति'माल अपने लिये लाज़िम कर लो क्यूंकि इस में मुंह की सफ़ाई और रब तआ़ला की रिज़ा का सबब है। (مُسندِ اِمام احمد بن حنبل ج۲ ص۴۳۸ حدیث ۵۸۶۹) ۞ ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि **मिस्वाक** में दस ख़ूबियां हैं : (चन्द येह है) मुंह साफ़ करती, मसूढ़े को मज़बूत़ बनाती, बीनाई बढ़ाती, बलग़म दूर करती, मुंह की बदबू ख़त्म करती सुन्नत के मुवाफ़िक़ है, फ़िरिश्ते ख़ुश होते हैं, रब राज़ी होता है। ۞ सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : चार

www.dawateislami.net

चीज़ें अ़क़्ल बढ़ाती हैं : फ़ुज़ूल बातों से परहेज़, मिस्वाक का इस्ति'माल, सुलहा या'नी नेक लोगों की सोह़बत और अपने इ़ल्म पर अ़मल करना । (اِحیاءُ العُلوم ج۳ص۲۷) ۞ मिस्वाक पीलू या ज़ैतून या नीम वग़ैरा कड़वी लकड़ी की हो मिस्वाक की मोटाई छुंगलिया या'नी छोटी उंगली के बराबर हो । ۞ मिस्वाक जब ना क़ाबिले इस्ति'माल हो जाए तो फेंक मत दीजिये कि येह आलए अदाए सुन्नत है, किसी जगह एह़तियात़ से रख दीजिये या दफ़्न कर दीजिये या पथ्थर वग़ैरा वज़्न बांध कर समन्दर में डुबो दीजिये ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ दो कुतुब बहारे शरीअ़त ह़िस्सा **16** (**312** सफ़ह़ात) नीज़ **120** सफ़ह़ात की किताब "सुन्नतें और आदाब" हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये । सुन्नतों की तर्बिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है ।

तीन दिन हर माह जो अपनाए मदनी क़ाफ़िला
बे ह़िसाब उस का ख़ुदाया ख़ुल्द में हो दाख़िला

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

📖 बयान करने के मुतअ़ल्लिक़ मा'रूज़ात 📖

(1) बयान करने से पहले कम अज़ कम एक बार ज़रूर ज़रूर और ज़रूर पढ़ लें
(2) जो कुछ लिखा है वोही सुनाएं, अपनी त़रफ़ से कमी-बेशी न करें
(3) हेडिंग, ह़वालाजात, आयात, और अ़रबी इबारात हरगिज़ न पढ़ा करें
(4) बयान के ह़ुसूल के लिये अपनी काबीना के कारकर्दगी ज़िम्मेदार से राबित़ा रखें
(5) अगर बराहे रास्त बयान न मिल सके तो वेब साइट से डाऊन लोड कर लें

✍ राबित़ा ✍

MAJLISE TARAJIM, BARODA (DAWATE ISLAMI)
translation.baroda@dawateislami.net (+ 91 9327776311)
www.dawateislami.net

www.dawateislami.net

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पढ़े जाने वाले 7 दुरूदे पाक और 1 दुआ़

﴾1﴿ शबे जुमुआ़ का दुरूद :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الْحَبِيْبِ الْعَالِي الْقَدْرِ الْعَظِيْمِ الْجَاهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ

बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि जो शख़्स हर शबे जुमुआ़ (जुमुआ़ और जुमा'रात की दरमियानी रात) इस दुरूद शरीफ़ को पाबन्दी से कम अज़ कम एक मरतबा पढ़ेगा तो मौत के वक़्त सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत करेगा और क़ब्र में दाख़िल होते वक़्त भी, यहां तक कि वोह देखेगा कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उसे **क़ब्र में अपने रह़मत भरे हाथों से उतार रहे हैं ।** (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰى سَيِّدِ السَّادات ص ١٥١ ملخصًا)

﴾2﴿ तमाम गुनाह मुआ़फ़ :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَسَلِّمْ

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स येह दुरूदे पाक पढ़े, अगर खड़ा था तो बैठने से पहले और बैठा था तो खड़े होने से पहले उस के **गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे ।** (اَیضاً ص ٦٥)

﴾3﴿ रह़मत के सत्तर दरवाज़े : صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ

जो येह दुरूदे पाक पढ़ता है तो उस पर **रह़मत के 70 दरवाज़े खोल दिये जाते हैं ।** (اَلْقَوْلُ الْبَدِيْع ص ٢٧٧)

﴾4﴿ एक हज़ार दिन की नेकियां :

جَزَى اللّٰهُ عَنَّا مُحَمَّدًا مَا هُوَ اَهْلُهٗ

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इस दुरूदे पाक को पढ़ने वाले के लिये **सत्तर फ़िरिश्ते एक हज़ार दिन तक नेकियां लिखते हैं ।** (مَجْمَعُ الزَّوَائِد)

www.dawateislami.net

﴾5﴿ **छे लाख दुरूद शरीफ़ का सवाब :**

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَدَدَ مَا فِیْ عِلْمِ اللّٰہِ صَلَاۃً دَآئِمَۃً بِدَوَامِ مُلْکِ اللّٰہِ

हज़रते अहमद सावी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی बा'ज़ बुज़ुर्गों से नक़्ल करते हैं : इस दुरूद शरीफ़ को एक बार पढ़ने से **छे लाख दुरूद शरीफ़ पढ़ने का सवाब** हासिल होता है। (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰی سَیِّدِ السَّادات)

﴾6﴿ **कुर्बे मुस्तफ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:**

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ کَمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰی لَہٗ

एक दिन एक शख़्स आया तो हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे अपने और सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दरमियान बिठा लिया। इस से सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن को तअ़ज्जुब हुवा कि **येह कौन ज़ी मर्तबा है!!!** जब वोह चला गया तो सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह जब मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो यूं पढ़ता है। (اَلْقَوْلُ الْبَدِیْع ص ۱۲۵)

﴾7﴿ **दुरूदे शफ़ाअ़त :**

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّاَنْزِلْہُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَکَ یَوْمَ الْقِیَامَۃِ

शाफ़ेए उमम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : जो शख़्स यूं दुरूदे पाक पढ़े उस के लिये **मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो जाती है!!!**

(الترغیب والترہیب ج ۲ ص ۳۲۹، حدیث ۳۱)

हर रात इबादत में गुज़ारने का आसान नुस्ख़ा

ग़राइबुल कुरआन सफ़हा 187 पर एक रिवायत नक़्ल की गई है कि जो शख़्स रात में येह दुआ 3 मरतबा पढ़ लेगा तो गोया उस ने शबे क़द्र को पा लिया। लिहाज़ा हर रात इस दुआ को पढ़ लेना चाहिये।

दुआ येह है :

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ الْحَلِیْمُ الْکَرِیْمُ، سُبْحٰنَ اللّٰہِ رَبِّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِیْم

(या'नी ख़ुदाए ह़लीम व करीम के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पाक है जो सातों आस्मानों और अ़र्शे अ़ज़ीम का परवर दगार है) (फ़ैज़ाने सुन्नत, जिल्द अव्वल, स. **1163-1164**)

www.dawateislami.net